हिंदी विश्वविद्यालय में हिंदी दिवस आयोजित

हिंदी को विकास की वैकल्पिक प्रणाली बनाया जाए - प्रो. चित्तरंजन मिश्र

वर्धा दि. 14 सितंबर 2015: हिंदी को और विस्तारित करने के लिए हमें हिंदी को विकास की वैकल्पिक प्रणाली बनाना चाहिए। संकल्प और प्रेरणा का विषय बनाने से हिंदी को विश्व स्तर पर और बल प्रदान होगा। उक्त विचार महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति प्रो. चित्तरंजन मिश्र ने व्यक्त किये। वे 14 सितंबर को विश्वविद्यालय में हिंदी दिवस पर आयोजित कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए बोल रहे थे। हबीब तनवीर सभागार में आयोजित कार्यक्रम में मंच पर वक्ता के रूप में आवासीय लेखक अरूणेश नीरन, कुलसचिव डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र, साहित्य विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. के. के. सिंह तथा शिक्षा विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. अरबिंद कुमार झा उपस्थित थे।

प्रो. चित्तरंजन मिश्र ने कहा कि भाषा का सवाल लोकतंत्र की सफलता का सवाल है। उन्होंने सुझाव दिया कि सरकारों को बहुसंख्यक जनता की भाषा का उपयोग करना चाहिए। उन्होंने माना कि अपनी भाषा में सोचने और पढ़ाई करने से ही भाषा के विकास को और बल मिल सकेगा।

आवासीय लेखक अरूणेश नीरन ने कहा कि समर्पण भाव से कार्य करने से हिंदी भाषा को बढ़ावा मिल सकेगा। उन्होंने मॉरिशस सरकार द्वारा भोजपुरी को आधिकारिक भाषा बनाये जाने का जिक्र करते हुए कहा कि सरकार को बाध्य करने की शक्ति मिलने से ही हिंदी को सम्मान का स्थान मिल सकेगा।

प्रो. के. के. सिंह ने कहा कि हिंदी के विकास के लिए अनुकूल वातावरण तैयार किया जाना आवश्यक है। प्रो. अरविंद झा ने कहा कि हिंदी केवल सम्प्रेषण की नहीं, विचार और विचारों के निर्माण की भी भाषा है। कार्यक्रम का संचालन हिंदी अधिकारी राजेश यादव ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन कुलसचिव डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र ने प्रस्तुत किया। इस अवसर पर अध्यापक, अधिकारी एवं विद्यार्थी उपस्थित थे।